शोध-सारांश

वर्तमान में भारतीय समाज एक पितृसत्ता प्रधान समाज है। इस समाज में स्त्री की स्थिति कभी बहुत अच्छी नहीं रही है। विभिन्न भूमिकाओं में स्त्री के अस्तित्व को बांध दिया गया। उसकी स्वयं की अस्मिता को भुलाने के लिए कई परम्पराओं,मान्यताओं और रूढ़ियों का व्यूह रच दिया गया। साथ ही स्त्री की मानसिकता को पुरुष सत्ता को पोषित करने के अनुरूप बनाया गया। कार्यक्षेत्र में उनकी उपस्थिति प्रतिबंधित कर दी गई। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक ,सांस्कृतिक तथा पारिवारिक क्षेत्र में भी उनको दोयम दर्जे का स्थान दिया गया। उन्नीसवीं सदी में जब स्त्री मुक्ति के प्रश्न समाज में उठे तब पुरुषों को अपनी सत्ता के खोने का भय हुआ और उसने अन्य अनेक तरीकों से स्त्री को शोषित करके प्रताड़ित करना शुरू कर दिया।

आधुनिकता और स्त्री विमर्श के इस दौर में स्त्री अस्मिता की वैश्विक स्तर पर स्थिति में सुधार हुआ है। स्त्री ने सशक्त ढंग से अपनी क्षमता को प्रमाणित किया है। मानव युग की इस नई सभ्यता में स्त्री , पुरुषों से हर क्षेत्र में बराबरी की प्रतियोगिता कर रही है। किन्तु विडम्बना वही है कि स्त्रियों को पुरुषों से अधिक संघर्ष करना पड़ता है वह भी उसके लिंगीय भेद के कारण। यह लिंगीय भेद उसे परिवार, समाज और कार्यक्षेत्र सभी स्थानों पर झेलना पड़ता है। आज स्त्री में शिक्षा, जागरूकता तथा अपने अस्तित्वबोध के प्रति चेतना है किन्तु उसके पारिवारिक व सामाजिक उत्तरदात्यित्व उसे ऊपर उठने से रोकते हैं। ये उत्तरदायित्व केवल उसे ही दे दिए जाते हैं जो उसके अस्मिताबोध को हमेशा चुनौती देते रहते हैं।

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श के अंतर्गत समय–समय पर स्त्री जीवन की नई समस्याओं और नए मुद्दों पर तार्किक ढंग से चर्चा की जा रही है। साहित्य की अन्य विधाओं में जहाँ लेखक इन परिवर्तनों को आत्मसात कर प्रवक्ता के रूप में व्यक्त करता है वहीं आत्मकथा एक

ऐसी विधा है जिसमे अपने अनुभवों को यथार्थ रूप में व्यक्त किया जाता है । महिला आत्मकथाकारों द्वारा लिखी गई आत्मकथाओं में पितृसत्ता का दमनकारी स्वरुप विभिन्न स्तरों पर नज़र आता है । महिला आत्मकथाकारों ने अपने अस्तित्व के प्रति जागरूक होने पर अपने यथार्थ अनुभवों व सामजिक स्थिति को आत्मकथा में अभिव्यक्त किया । उनके जीवन में आई नई उपलब्धियों, नए मूल्यों और नई समस्याओं को उन्होंने अभिव्यक्ति के खतरे उठा कर भी पारदर्शी रूप में व्यक्त किया है । महिलाओं ने परिवार और साहित्य के प्रति अपने दायित्व को समान रूप से निभाने का प्रयास किया है ।

यह आत्मकथा उस समय की स्त्री की कथा है जब समाज में स्त्री स्वतंत्रता नया भाव बोध था | समाज में केवल उच्च और शिक्षित घरों की स्त्रियों को घर के बाहर निर्णय की आज़ादी होती थी| स्वतंत्रता के बाद पचास से अस्सी के दशक में स्त्री की पुरुष के बराबर आज़ादी जोखिम या उच्श्रृंख्लता की श्रेणी में रखी जाती थी | उस समय स्त्रियों के लिए जिस तरह के उपदेशात्मक साहित्य की रचना हो रही थी (हिंदी साहित्य का दिवेदी युग) उससे तो यही पता चलता है कि स्त्री को समाज में कुछ सीमाओं के साथ ही छूट दी गई थी |अब प्रश्न यह है कि क्या स्त्री अपने भीतर पीढ़ियों से चली आ रही पितृसत्तात्मक सोच से ग्रसित खुद इस सशर्त छूट को पाना चाहती थी | ऐसी बेहद कम ही स्त्रियाँ रही होंगी |वास्तव में उन दशकों में समाज स्त्री मुक्ति के विचारों से परिचित तो हो गया किन्तु उसे व्यावहारिक रूप में ग्रहण नहीं कर पाया| यह केवल बौद्धिक स्तरों पर चेतना और कल्पना तक सीमित रह गया |

अपनी आत्मकथा 'हादसे' में रमणिका गुप्ता ने केवल निजी यथार्थ को ही नहीं प्रस्तुत किया है अपितु वर्तमान युग के सच को भी प्रकट किया है । स्पष्ट है कि स्त्री के जीवन में 'हादसे' उसके समाज के परम्परागत स्त्री व्यक्तित्व से हटकर चलने के कारण समाज द्वारा ही उत्पन्न की गई कठिनाइयां ही हैं । स्त्री का समष्टि रूप अर्थात् नेत्री या नायक रूप पुरुष को स्वाभाविक रूप से सहनीय नहीं होता । ज़ाहिर है पुरुष सत्तात्मक मानसिकता इसे स्वीकार

नहीं कर पाती कि एक स्त्री द्वारा धीरोदात्त ,पराक्रमी और वीर गुणों का वरण कर उसके पुरुषत्व को चुनौती दी जाये। रमणिका स्वतंत्रता ,समानता और वैयक्तिक संप्रभुता को स्त्री–पुरुष के खेमे में न बांटकर मानव मात्र के लिए आवश्यक मानती हैं। यह स्त्री के पारंपरिक क्षेत्र से हटकरस्त्री विमर्श को उन क्षेत्रों में खोजने का प्रयास है जहाँ अधिकतर पुरुषों का आधिपत्य रहा है। 70 से लेकर 90 दशक तक स्त्रियों की दशा भारत में क्या रही है ? ट्रेड यूनियन तथा राजनीति में स्त्रियों के प्रवेश और फिर वहां स्थिर रहने के लिए सामने आई समस्याओं और उनसे संघर्ष को स्त्री मुक्ति के परिप्रेक्ष्य में खोजने का प्रयास किया गया है। समाज की बनाई सीमाओं से आगे विद्रोही जीवन जीने की स्त्री की आकांक्षा को स्त्री विमर्श की दृष्टि से देखने के कारण यह लघु शोध -प्रबंध महत्वपूर्ण है।